Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XII, Issue No. 23, October-2016, ISSN 2230-7540

आधुनिक काल के इतिहास में हिन्दी गध साहित्य का विकासात्मक अध्ययन

Bhayani Bhavna Bhagvanajibhai[1]* Dr. Neetee Mehta[2]

[1]Research Scholar, Bhagwant University, Ajmer

[2]Ajmer Dusara

----------X----------

प्रस्तावना :–

प्रत्येक मनुष्य अपने भावों की अभिव्यक्ति किसी न किसी भाषा के माध्यम से ही करता है। भाषा के अभाव में न तो किसी सामाजिक परिवेश में कल्पना की जा सकती है, और नही सामाजिक व राष्ट्रीय प्रगति संभव है। साहित्य, कला, विज्ञान, दर्शन आदि सभी का आधार भाषा ही है। किसी भी देश के निवासियों में राष्ट्रीय एकता एवं विकास के लिए भाषा का होना परम आवश्यक है। जिसका व्यवहार मानव समुदाय आपस में कर सके। हिन्दी भाषा को मानव जन सम्पर्क भाषा बनने का गौरव प्राप्त किया है। भाषा मानव के विचारों की अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

इस काल में आकर हिन्दी पूर्णतय विकसित हो गई अभी तक वह पद्य के लिए ही अधिक प्रयुक्त होती थी। और उसमें गद्य साहित्य बहुत कम लिखा गया था। परन्तु इस काल में आते ही एक ओर तो हिन्दी की बोलियों में पर्याप्त समृद्ध साहित्य लिखा जाने लगा। दूसरी ओर उसकी ये बोलियॉ इतनी विकसित हो गयी। सबसे बड़ी बात तो यह है कि बोली न रहकर उपभाषा के पद पर आसीन हो गयी। सबसे बड़ी बात यह है कि इस काल में आकर हिन्दी की एक 'खड़ी बोली' ने इतना अधिक विकास किया कि वह पहले तो मेरठ, मुजफ्फरनगर आदि जिलों में केवल बोलचाल की ही बोली थी। परन्तु अब उपभाषा बनकर सर्वप्रथम गद्य एवं पद्य की एक समृद्ध भाषा बनी जिसमें से पुराने तद्भव एवं देशज शब्द निकल गए, नए–नए परिभाषिक शब्दों को अपना लिया गया और जिसे ज्ञान–विज्ञान के लिए अत्यन्त सक्षम साशक्त एवं समर्थ भाषा बना लिया गया। इसी भाषा को विदेशों में भारत की 'हिन्दी' भाषा माना जाता है। इसी में भारत की 'हिन्दी' भाषा माना जाता है। इसी में भारत की 'हिन्दी' भाषा माना जाता है। इसी में भारत की समुन्नत साहित्य की रचना हो रही है। इसी में हिन्दी का सर्वोत्कृष्ट गद्य साहित्य उपन्यास, कहानी, आलोचना, जीवन, रेखाचित्रा, संस्मरण, रिपोर्ताज, नाटक, एकांकी आदि लिखा जा रहा है। और यही आजकल अधिकांश हिन्दी कवियों की काव्य भाषा है।

हिन्दी भाषा का विकास:-

भारत के मध्यदेश एवं अन्तर्वेद में शौरसेनी अपभ्रंश से हिन्दी भाषा का विकास हुआ है। इस विकास का आभास 1000 ई0 के आसपास भली प्रकार से मिलने लगता है। ईसा की दसवीं शताब्दी से ही हिन्दी साहित्य के दर्शन होने लगते हैं। हिन्दी के आरम्भिक रूपों का आभास हमें सर्पप्रथम हेमचन्द्र, शब्दानुशासन में उद्वत उदाहरणों में मिल जाते हैं। इसके उपरान्त इसका पर्याप्त विकास होता चला गया। जिसे सुविधा की दृष्टि से तीन कालों में विभाजित कर सकते हैं।

(क) आदि काल (1000ई0 से 1500 ई0 तक)

(ख) मध्यकाल (1500 ई0 से 1800 ई0 तक)

(ग) आधुनिक काल (1800 ई0 से अब तक)

हिन्दी शब्द की उत्पत्ति:-

हिन्दी शब्द 'हिन्द्' में 'ईक' प्रत्यय के योग से बना है। 500 ई0 पूर्व के आसपास दारा प्रथम के समय में सिन्धु नदी की सभी पर्वती सम्पूर्ण भारतीय भूमि ईरानी शासकों के अधिकार में थी। अतः प्राचीन संबंध के कारण ही भारतीय 'सिन्धु' एवं सप्तसिन्धवः शब्द ईरान पहुॅचे तथा ईरानी भाषा की यह विशेषता है कि वहॉ 'स' ध्वनि 'ह' में परिवर्तित हो जाती है। जैसे संस्कृत 'सप्त' का अवेस्ता में 'हफ्त' संस्कृत 'असुर' का अवेस्ता में 'सप्त सिन्धवः' तथा 'सिन्धु' का हिन्दु हो गया। उस समय ईरानी लोगों के समीप भारत का वही भू–भाग था, जो सिन्धु नदी के समीपवर्ती था अतः वे इस भू–भाग को 'हिन्द' या 'हिन्द प्रदेश' कहते थे। परन्तु कालान्तर में वहा ये नाम सम्पूर्ण भारत के लिए प्रयुक्त होने लगा। इस 'हिन्द' शब्द में 'ईक' प्रत्यय का प्रयोग एवं योग होने पर 'हिन्दी' शब्द बना है, जिसका अर्थ ईरानी भाषा में 'हिन्द का' या 'भारत की' होता है। इस प्रकार 'हिन्दी' शब्द का प्राचीन अर्थ भारत का निवासी भारत की वस्तु एवं पदार्थ होता है। जिस तरह हिन्दी शब्द भारत के निवासियों, पदार्थो के लिए व्यवहृत होने लगा और 'हिन्दू' शब्द इस्लाम से भिन्न वैदिक धर्म को मानने वालों के लिए प्रयुक्त होने लगा। दशवीं से बारहीं शताब्दी के अंत तक 'हिन्दी' या 'हिन्दवी' शब्द किसी निश्चित भाषा के अर्थ में प्रयोग नही किया जाता था। परन्तु जब मुसलमानों ने साम्राज्य विस्तार किया तो उन्हें शासित वर्ग से अपना संबंध स्थापित करने के लिए दिल्ली के आस–पास बोली जाने वाली भाषा को अपना लिया जिससे मुसलमान शासक 'हिन्दी' या 'हिन्दवी' कहने लगे। यह शब्द इतना व्यापक हो गया कि

www.ignited.in

कालान्तर में हिन्दुओं ने भी इसे स्वीकार कर लिया। यद्यपि वे संस्कृत भिन्न इस भाषा को 'भाखा' भी कहते हैं।

हिन्दी की वर्तमान स्थिति:-

भाषा मानव की तरक्की का सर्वप्रथम और महत्वपूर्ण माध्यम है। भाषा के आधार पर समाज का विकास हुआ है और समाज के आधार पर भाषा का विकसित रूप देखने को मिला है। हर व्यक्ति किसी न किसी भाषा से आत्मीय रूप से जुड़े होते हैं। इस भाषा के माध्यम से ही व्यक्ति का व्यक्तित्व विकसित होता है। और उसको गतिशीलता मिलती है। व्यक्ति ऐसी ही भाषा के माध्यम से ही परिवार और समाज में अपना स्थाना बनाता है। भक्ति में सामाजिक, सांस्कृतिक धार्मिक और दार्शनिक आदि भाव ऐसी भाषा के ही आधार पर विकसित होते है। कुछ विद्वानों का कथन है कि जन्म के पश्चात बालक जिस भाषायी परिवेश में रहकर प्रारम्भिक भाव का आदान–प्रदान करता है। उसे उसकी भाषा की संज्ञा देनी चाहिए। माना एक बालक तमिल क्षेत्रा में रहकर बड़ा होता है। तो उसकी प्रारम्भिक अभिव्यक्ति की भाषा तमिल होगी। शिक्षा ग्रहण करते हुए वह समाज, शिक्षा, राजनीति और धर्म आदि के क्षेत्रा में गतिशील रहने के लिए हिन्दी भाषा को ही अपनाता है। लेकिन हिन्दी की वर्तमान स्थिति अत्यधिक दयनीय है। क्योकि किसी भी राजकीय एवं अन्य कार्यालयों में सभी कार्य अंग्रेजी भाषा में किए जा रहे हैं। वर्तमान में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी बनाया गया है। हिन्दी भाषा के प्रति हर व्यक्ति का रूझान कम हो गया है। हिन्दी भाषा को हर व्यक्ति गौण समझने लग गया है। इस कारण हिन्दी का वर्चस्व समाप्त होने की कगार पर है। इसलिए हिन्दी भाषा को बचाने के लिए निम्न प्रयास किए जाने चाहिए।

हिन्दी भाषा का उद्‌भव

हिन्दी जिस भाषा–धारा के विशिष्ट देशिक और कालिक रूप का नाम है। इसका भारत में प्राचीनतम् रूप संस्कृत है। संस्कृत का काल मोटे रूप में 1500 ई0 पूर्व से माना जाता है। संस्कृत भाषा के भी दो रूप हैं। संस्कृत कालीन बोलचाल की भाषा विकसित होते–होते 500 ई0 के बाद प्रवृत्तिः काफी बदल गई है, जिसे 'पालि' के नाम से अभिहित किया गया। पहली ईसवी से तक आते–आते लोक व्यवहार की भाषा और परिवर्तित हुई तथा पहली ईसवी से 500 ई0 तक का इसका रूप 'प्राकृत' के नाम से अभिहित किया गया मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं का तृतीय पर्व 'अपभ्रंश काल' के नाम से अभिहित किया गया। अपभ्रंश भाषा का काल मोटे रूप से 500 से 1000 ई0 तक है। कालान्तर में अपभ्रंश भाषा को साहित्यिक गरिमा भी प्राप्त हुई । तथा इसके देशगत विभेदो ं के रूप में प्रादेशिक भाषाओं हिन्दी, पंजाबी, सिन्धी, गुजराती, मराठी, बाग्ला, असमी, उड़िया, लहॅदा आदि का जन्म हुआ। इस प्रकार हिन्दी के विकास के पूर्व भारत में निम्नलिखित भाषाएॅ प्रचलित थी।

1. वैदिक संस्कृत
2. लौकिक संस्कृत
3. प्राकृत भाषा
4. अपभ्रंश भाषा

1. वैदिक संस्कृत :– यह आर्यो की भाषा थी। इसका रूप वेदों में सुरक्षित है। जो विशेषकर ऋगवेद में उपलब्ध है।

2. लौकिक संस्कृत :– वैदिक संस्कृत में शनैः–शनैः परिवर्तन होने के कारण जब इसे विद्वानों ने व्याकरण के नियमों में बॉधना प्रारम्भ किया और उसमें साहित्यिक रचना होने लगी तो यह भाषा पहली भाषा से अलग होने लगी एवं हो गयी तब इसे 'संस्कृत' की संज्ञा प्रदान की।

3. प्राकृत भाषा :– जिस समय भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेश में आर्यो की संस्कृत भाषा का विकास हो रहा था। उस समय भारत के पूर्व भाग में प्रचलित एक जन भाषा अलग से विकास पा रही थी। जिसे 'प्राकृत' भाषा कहा गया। इसका साहित्यिक रूप बौद्ध ग्रन्थों तथा सम्राट अशोक के शिला लेखों में देखने का मिलता है। जिसे 'पालि' की संज्ञा दी गयी। बौद्ध ग्रन्थों में पाली का जा रूप उपलब्ध होता है। वह इस बोल–चाल की भाषा का ही शिष्ट और मानक रूप था। प्राकृत भाषा के स्थान भेद के कारण निम्न पॉच भेद हो गए।

(क) शौर सेनी – इस प्रचार राजा शूरशेन के अधिकार क्षेत्रा में था।

(ख) मागधी – बिहार का नाम पहले मगध था इस क्षेत्रा की भाषा मगधी कहलायी।

(ग) अर्द्ध मागधी – शोर सैनी तथा मागधी के बीच का क्षेत्रा 'अवध' अर्द्ध मागधी का क्षेत्रा था।

(घ) महाराष्ट्री – वर्तमान वरार प्रान्त और उसके समीपवर्ती प्रदेश की भाषा महाराष्ट्री कहलाई।

(≥) पैशाची –यह पैशाची प्राकृत वास्तव में दरद प्राकृत का ही नाम है। जिसे भारतीय आर्य भाषाओं के अर्न्तगत नही गिना जाना चाहिए। काश्मीर के उत्तरी प्रांत को पिशाच कहने से इसका नाम 'पैशाची' पड़ा और यह कश्मीर प्रदेश में बोली जाती है।

4. अपभ्रंश भाषा :– प्राकृत भाषाओं से ही विभिन्न क्षेत्रीय अपभ्रंशों का विकास हुआ। अपभ्रंश भाषा का काल सामान्यतः 500 ई0 से 1000 ई0 तक माना जाता है। आज के प्राप्त अपभ्रंश साहित्य में मुख्यतः पश्चिमी और पूर्वी दो ही भाषा रूप मिलते है।

भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी:-

आधुनिक आर्य भाषाओं का जन्म अपभ्रंश के विभिन्न क्षेत्रीय रूपों से इस प्रकार माना जा सकता है।

अपभ्रंश	आधुनिक भाषाएॅ तथा उपभाषाएॅ
(क) शौरशैनी	पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, पहाड़ी, गुजराती
(ख) पैशाची	लहॅदा, पंजाबी
(ग) ब्राजड़	सिन्धी
(घ) महाराष्ट्री	मराठी
(≥) मागध	बिहारी, बंगला, उड़िया, असमिया
(च) अर्द्ध मागधी	पूर्वी हिन्दी

भारतीय उप–भाषाएँ एवं बोलियाँ

हिन्दी शब्द अपने विस्तृतत्म अर्थ में हिन्दी प्रदेश में बोली जाने वाली निम्नलिखित पॉच उपभाषाएँ और उनकी सत्तरह बोलियों का द्योतक है।

उप–भाषाएँ	बोलियाँ
(क) पश्चिमी हिन्दी	खड़ी बोली, ब्रजभाषा, हरियाणी, बुन्देली, कन्नौजी
(ख) पूर्वी हिन्दी	अवधी, बधेली, छत्तीसग
(ग) राजस्थानी	मारवाड़ी, मेवाती, मालवी, जयपुरी
(घ) पहाड़ी	कुमॉऊनी, गढ़वाली
(≥) बिहारी	भोजपुरी, मगही, मैथली

हिन्दी साहित्य के इतिहास में 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग उपरिनिर्दिष्ट सत्तरह बोलियों के अर्थ में होता है। इसलिए उसके अर्न्तगत ब्रज, अवधी, डिगंल, मैथिली, खड़ीबोली आदि प्रायः सभी में लिखित साहित्य का विवेचन किया जाता है। इस प्रकार हिन्दी भाषा का प्रारम्भ शौरशैनी अर्द्ध मागधी तथा मागधी अपभ्रंश से मानना होगा। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रसिद्ध भाषा विद् डॉ भोलानाथ तिवारी ने हिन्दी भाषा का उद्भव अपभ्रंश के शौरसेनी, अर्द्ध मागधी और मागधी रूपों में स्वीकार किया है।

सारांश

हिन्दी किसी प्रदेश की भाषा नही है, वह पूरे भारत की भाषा है, अतः उसे अविरल भारतीय रूप देने के लिए उसकी शब्दावली को विपुल बनाया होगा। भारत की अन्य प्रादेशिक भाषाओं के बहु प्रचलित शब्दों को यथावत अथवा अनुकूल करके स्वीकारना होगा प्रशासनिक, वैज्ञानिक, तकनीकि और जन जीवन से सम्बन्धित अन्य सभी क्षेत्रों के शब्दों के निर्माण में उदार दृष्टि अपनानी होगी। प्रायः हम अनुभव करते है कि अन्य भाषाओं के साहित्य से हिन्दी में जो अनुवाद किए जाते है। वे अस्वाभाविक और प्रायः प्राणहीन होते हैं। अतः हिन्दी में अनुवाद का कार्य वे ही लोग सम्पन्न करें जिन्हें न केवल हिन्दी का वरन् जिस भाषा में वे अनुवाद कर रहे हो उसका भी अच्छा ज्ञान होना चाहिए। हिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी के पठन–पाठन की दृष्टि से आज सबसे बड़ी आवश्यकता हिन्दी की आधार भूत संरचनाओं एवं आधारभूत शब्दावली के संचयन, वर्गीकरण और क्रमायोजन की है। जिस प्रकार अंग्रजी शिक्षण के लिए गठन या संरचना पद्धति द्वारा मूल संरचनाएँ लगभग 3000 और मूल शब्दावली लगभग 3000 हजार का संचयन कर लिया गया है तथा उन्हें वर्गीकृत एवं क्रमायोजित करके द्वितीय भाषा के रूप में अंग्रेजी पढाई जाती है। यही काम हिन्दी में भी किया जाना चाहिए। देश के दुर्भाग्य से अंग्रेजी आज भी परीक्षा का माध्यम बनी है। और अधिकतर प्रतियोगिता परीक्षायें इसी के द्वारा संचालित होती है ऐसी व्यवस्था में प्रश्न यह है कि कोई हिन्दी क्यों सीखे? अतः इस संबंध में हमारी राष्ट्रीय सरकार को यह निर्माण शीघ्र करना चाहिए कि हिन्दी परीक्षा का विषय हो उसका समुचित अध्यापन हो उसके अंक कुल अंक में जोड़े जाये मैट्रिक या हायर सेकण्डरी परीक्षा का प्रमाण–पत्रा प्राप्त करने के लिए हिन्दी में उर्त्तीणता अनिवार्य रखी जाय। तभी हिन्दी शिक्षण की उपयोगिता सिद्ध होगी और देश में भाषायी एकता आएगी। द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण का प्रारम्भ दस वर्ष की अवस्था में हो जाना चाहिए। क्योकि इस आयु में बालक का मस्तिष्क भाषाओं के सीखने में जितना लचीला और ग्रहणशील होता है उतना बाद में नही। अतः अच्छा हो यदि निम्न माध्यमिक की प्रथम कक्षा को ही हिन्दी का अध्ययन अहिन्दी भाषी प्रदेशों में शुरू किया जाय।

सन्दर्भ संकेत :

डॉ. रामकुमार शर्मा, **2007** प्रयोजनमूलक हिन्दी, साधना प्रकाशन सुभाष बाजार मेरठ – **250002]** पृष्ठ संख्या – **18]19]20]35]36**

डॉ नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स प्रकाशन ए–**95** सेक्टर –**5** नोयडा –**201301]** पृष्ट संख्या – **12] 13] 14] 15] 16]17**।

हिन्दी–साहित्य का सुबोध इतिहास (संस्करण 1985), ले. बाबू गुलाबराय, प्र. लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा।

हिन्दी–साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, ले. डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त, प्र. लोकभारती, इलाहाबाद।

हिन्दी–साहित्य : एक परिचय, ले. डॉ. त्रिभुवन सिंह, प्र. हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन्स, वाराणसी।

हिन्दी–साहित्य का प्रवृत्तिमूलक इतिहास, 1988, ले. डॉ. रामनिवास गुप्त, प्र. विपिन प्रकाशन, रोहतक।

हिन्दी भाषा एवं साहित्य विश्वकोश (द्वितीय खण्ड), सं. डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त, प्र. एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

Corresponding Author

Bhayani Bhavna Bhagvanajibhai*

Research Scholar, Bhagwant University, Ajmer

E-Mail – bhavnabbhayani@gmail.com